ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पत्र | सितंबर-अक्टूबर २०१७

आर्य सेवक

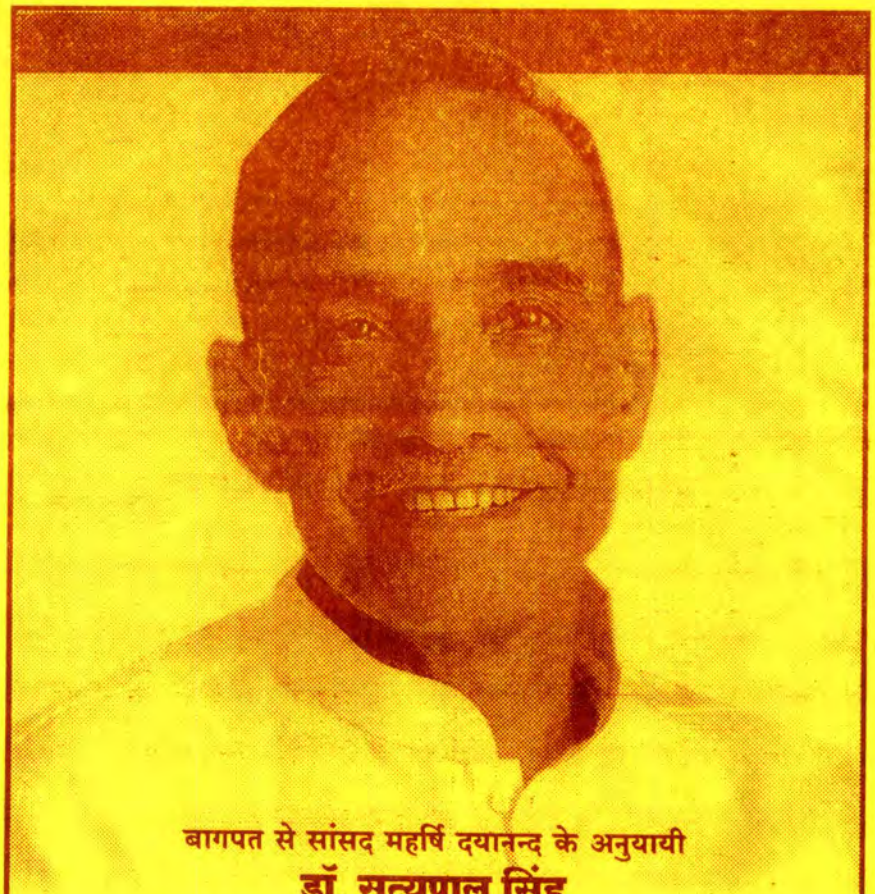

बागपत से सांसद महर्षि दयानन्द के अनुयायी

डॉ. सत्यपाल सिंह

(पूर्व कमिश्नर, मुम्बई पुलिस) के केन्द्र सरकार में

मानव संसाधन, जल संसाधन तथा नदी विकास एवं गंगा संरक्षण राज्यमंत्री बनने पर

हार्दिक बधाई

सभा कार्यालय - दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर (महाराष्ट्र)

ओ३म्

देश विदेश में आर्यसमाज द्वारा जागृति लाने के लिए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

एवम्

आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के तत्त्वावधान में

म्यांमार के ऐतिहासिक नगर माण्डले शहर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्यों का महाकुम्भ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार

6, 7, 8 अक्तूबर, 2017

सफलतार्थ हार्दिक शुभकामनाएँ

सर्वश्री सत्यवीर शास्त्री-सभा प्रधान, प्रा. अनिल शर्मा, जयसिंग गायकवाड, श्रीमती शशी सोनी-उप-प्रधान, अशोक यादव-सभा मंत्री, देवीप्रसाद आर्य, कृष्णलाल आर्य, हरिदत्त जुमळे, मयंक चतुर्वेदी-उपमंत्री, संतोष गुप्ता-कार्या. मंत्री, घनश्यामदास रेवतानी-कोषाध्यक्ष, रामसिंग ठाकुर-पुस्ताध्यक्ष, अंतरंग सदस्य सर्वश्री-ओमप्रकाश बोबडे, ताराचंद चौबे, लखनलाल सोनी, सुभाषराव सहारे, ब्रिजलाल राठी, सुदर्शनदेव आर्य, राजपाल यशपाल जानवाणी, रामभाऊ मुंगे, घनश्यामदास आर्य, मदनकुमार जाम्भुर्णे, रामभाऊ बोचरे, स्वामी आत्मानंद सरस्वती, वामनराव आवटे तथा लेखा निरिक्षक, रामराव घोडस्कर व समस्त आर्य समाजो की ओर मुम्बई पब्लिक ट्रस्ट १९५० अंतर्गत पंजिकृत धार्मिक लोक न्यास ट्रस्ट.

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ

सदर, नागपुर.

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष – ११६ अंक १४
सृष्टि संवत १९६०८५३११८
दयानन्दाब्द – १९२
संवत – २०७४
सन् २०१७ सितंबर–अक्तुबर

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो.नं. ०९४२२१५५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
अशोक यादव
मो. ०९३७३१२११६३
०९५११८३८९८१

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
e-mail : jasysinghgaekwad@gmail.com
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड,
कृपाल चौक, मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ९३७३१२११६४
मनोज शर्मा
मो. ९५६१०७९८९४

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार,
सदर, नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क्र. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
१.	मनुष्य के छः शत्रु कौन	विद्यासागर शास्त्री	२-४
२.	लोकोऽयं कर्म्मबन्धन	विद्यासागर शास्त्री	५-६
३.	स्वमार्यम-कृण्वन्तोविश्वमार्यन	रामभाऊ मुंगे गुरूजी	७-८
४.	वेदऋचा कुणी रचल्या?	पं. सत्यवीर शास्त्री	९-१०
५.	ऋचा कुणी रचल्या?	पं. सत्यवीर शास्त्री	११-१२
६.	लाभली आम्हा बाबांची कृतार्थता	सौ. संगीता दिवेंद्र तुरखडे	१३-१४
७.	मन्त्र व्याख्या	विद्यासागर शास्त्री	१५
८.	वेद प्रचार एवं श्रावणी पर्व समारोह	अश्विनी नांगिया	१६
९.	शिक्षक दिवस ५ सितंबर पर विशेष - प्रथम भारतीय प्रिंसिपल महात्मा हंसराज	वेदारीलाल आर्य	१७-१९
१०.	आदर्श परंपराओं का विश्व में प्रचार प्रसार क्यों नहीं हो रहा है?	रास अल खेमा यु.ए.ई.	२०-२१

==000==

टीप - प्रकाशित कृतियों में व्यक्ति विचार लेखकों के हैं इनसे आर्य सेवक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मनुष्य के छः शत्रु कौन?

द्वितीय - शुशुलुकयातुं जहि - भेड़िये की आदत छोड़ो।

इस वेदमद्धत्र में दूसरी आदत है - भेड़िए की। भेडिया शक्तिशाली के आगे झुकता है और कमजोर को दबाता है, अर्थात् इसप्रकार कायरता भीरूता की प्रवृत्ति राष्ट्र, समाज परिवार और व्यक्ति के लिए घातक है। यह मनोवृत्ति कायरता और भीरूता की सूचक है, वीरता की नहीं। आज राष्ट्र के कर्णधारों में यह मनोवृत्ति पनप रही है जिससे समाज का पतन हो रहा है। शासकों अधिकारियों में भेडिए की मनोवृत्ति पनपने से अन्याय होता है। शोषण होता है और अत्याचार होता है। समाज में बुराई बढ़ती है। रिश्वतखोरी, ब्लैकमेल होता है। लोग अपवित्र कमाई करने के अभ्यस्त हो जाते हैं। महिलाओं का अपमान होने लगता है। लोगों के चरित्र दूषित हो जाते है। नैतिक पतन हो जाता है। वेदमन्त्र कहता है तू जो क्रोधविष्ट होकर अपने भाइयों पर निर्दय अत्याचार कर डालता है यही तुझ में भेडियापन है। जो भी कुछ द्वेष, ईर्ष्या व हिंसा तू करता है वह सब तुझ मे जीवों को मारकर खा डालनेवाले भेडिये का-सा आचरण है। कुछ वर्ष पहले जो कुछ पंजाब में हुआ था। गुजरात (गोधरा काण्ड) में हुआ काश्मीर में होता रहता है।

रामजन्मभूमि अयोध्या विवाद को लेकर जो कुछ हुआ, हरियाणा में कई वर्ष पूर्व दरियापुर काण्ड-पानीपत काण्ड, मेवात क्षेत्र में आदि आदि यह सब भेड़िये आचरण नहीं तो क्या है? इसे आतंकवाद के नाम से कौन नहीं जानता। कुछ उदाहरणों से भेडिये इस मनोवृत्ति को समझने का प्रयास करें - रामगोपाल शालवाले अभिनन्दन ग्रन्थ में लिखा है।

एक कश्मीरी लड़की का जिसका नाम परमेश्वरी था, कुछ मुस्लिम युवकों ने उसका अपहरण किया और वह एक अज्ञान स्थान पर रखी गई। एक मुस्लिम युवक ने उसके साथ जबरन शादी रचाई। इस घटना ने उन दिनों एक तूफान खड़ा कर दिया जिसके अन्दर यह भय क्रियारत था कि भविष्य राज्य राज्य अधिकारियों की उपेक्षा से इस प्रकार के अपहरण करने का गुण्डों का साहस बढ़ जायेगा। बहुत से कश्मीरियों ने विरोध किया और आन्दोलन ने सत्याग्रह का रूप ले लिया। जिसके फल स्वरूप श्रीनगर में बहुत से कश्मीरी पण्डित गिरफ्तार कर लिए गये। सत्याग्रह में बहुत सी हिन्दू महिलाओं ने भाग लिया।

सत्याग्रहियों पर लाठी चार्ज किया गया जिससे अनेक स्त्री-पुरूषों को चोटे आई। उस समय मोहम्मद सादिक जम्मू कश्मीर के मुखमन्त्री थे।

उनके इशारे पर कश्मीरी पण्डितों और उनकी महिलाओं पर बेहद जुल्म किए गए। उनमें बड़ी नाराजगी फैली हुई थी। इस के बाद भी उनकी शिकायते दूर न की गई। सादिक गवर्नमेन्ट के दुर्व्यवहार की दुःखद कहानियाँ सुनकर आर्य समाज की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान नई दिल्ली के श्री रामगोपाल शालवाले आदि कुछ अधिकारी मौके पर छानबीन करने और आवश्यक कार्यवाही करने के लिए श्रीनगर गये। पूरी तरह तहकीकात करने और आवश्यक कार्यवाही करने के बाद आश्वस्त हो जाने पर कि ज्यादतियां की गई और कई अपहरण किये गए हैं। सार्वदेशिक सभा ने अपनी रिपोर्ट प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के पास भेजी। इस रिपोर्ट में न केवल अनेक लड़कियों द्वारा की गई आत्महत्याओं तथा कश्मीरी प्रजा को तंग किये जाने का भी उल्लेख था। इस रिपोर्ट में यह भी दिखाया गया था कि सादिक सरकार मुसलमानों का पक्ष लेकर किस प्रकार हिन्दुओं को हानि पहुँचा रही थी। दुर्भाय से यह शिकायत उत्तर के लिए प्रधानमंत्री इन्दिरा गान्धी ने अपराधी अर्थात् मुख्यमन्त्री सादिक के पास भेज दी।

जैसा कि प्रायः होता है अपराधी अपने अपराध को स्वीकार नहीं करता। मुख्यमन्त्री सादिक ने उत्तर में लिख दिया कि जो अपराध लगाए गए है उनमें कोई सत्यता नहीं। इस पर प्रधानमन्त्री ने मामले में आगे कार्यवाही किए जाने के लिए कुछ ठोस प्रमाण मांगे। सार्वदेशिक सभा ने पण्डित ने त्रपाल शास्त्री तथा अन्य कश्मीरी पण्डितों की सहायता

से एक ज्ञापन तैयार किया जिसमें प्रत्येक आरोप के साथ समय स्थान और ढंग का विस्तृत विवरण दिया गया था। यह ज्ञापन प्रमाणों के साथ प्रधानमन्त्री को भेज दिया गया। प्रधान मन्त्री ने इस जांच के लिए कोहली कमीशन नियुक्त कर दिया। लगभग एक वर्ष बाद लाला रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा जब श्रीनगर आर्य समाज हजूरीबाग में ठहरे हुए थे तब कोहली ने वहाँ उनसे भेंट की और बताया इस सम्बन्ध में १८५ गवाहों की गवाही दर्ज कर ली गई है। लाला रामगोपाल शालवाले कहा कि मेरी गवाही आप दिल्ली में दर्ज कर लेना। कोहली ने दिल्ली आकर रामगोपाल शालवाले को अपने कार्यालय में बुलाकर सम्मानपूर्वक उनका बयान दर्ज किया रामगोपाल शालवाले सांसद भी थे। अतः लोकसभा में भी उन्होंने सादिक सरकार के खिलाफ प्रश्नोत्तर पूछकर अपना अभियान सादिक भेडिया आचरण के विरूद्ध जारी रखा। प्रधानमन्त्री ने आश्वासन दिया कि रिपोर्ट के अनुसार कार्यवाही अवश्य होगी। उसके कुछ समय बाद सादिक साहब को मुखमन्त्री पद से हटा दिया गया और बख्शी गुलाम मुहम्मद जम्मू कश्मीर के मुख्यमन्त्री बनें और कश्मीरियों को सताया जाना बन्द बन्द हो गया।

सन्देहशील भेड़िया मनोवृत्ति का एक और उदाहरण देखिए – उन दिनों भारत के राष्ट्रपति श्री जाकिर हुसैन थे। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में एक मस्जिद के निर्माण की योजना बनाई। वह शीघ्रातिशीघ्र रात के समय बनाई जानेवाली थी जिससे किसी को भी इसके निर्माण की योजना का पता न लगे। फिर भी राष्ट्रपति भवन के हिन्दू कर्मचारियों को इसका पता लग गया और उन्होंने लोकसभा के एक सदस्य को यह खबर दे दी और ब्यौरा बता दिया। उन कर्मचारियों ने उन सदस्य महोदय से उस सदस्य महोदय प्रार्थना की कि वे राष्ट्रपति भवन में मस्जिद का निर्माण न होने दें। और इस के लिए राष्ट्रपति को मिलकर उन्हें समझाएं कि इससे एक बुरी प्रथा पड़ जायेगी। उन सदस्य महोदय ने इस काम को हाथ में लेने से इंकार कर दिया। यदि श्री जाकिर हुसैन ने इरादा पक्का कर लिया है तो उनके लोकसभा सदस्य के अनुरोध को स्वीकार नहीं करेंगे।

जब जाकिर साहब बिहार के राज्यपाल थे तब भी उन्होंने ऐसा ही कार्य किया था। निराश हुए वे कर्मचारी लाला रामगोपाल शालवाले के पास पहुँचे। उनको उन कर्मचारियों ने राष्ट्रपति भवन में मस्जिद के निर्माण की समस्त योजना बताई। लाला रामगोपाल शालवाले के साथ सारी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यजगत् खड़ा दिखाई देता था। शालवाले ने कहा – राष्ट्रपति भवन में मस्जिद नहीं बनने देंगे। उन हिन्दू कर्मचारियों को ऐसा लगा कि राष्ट्रपति की भेड़ियां मनोवृत्ति को आर्य समाज ही रोक सकता है अन्य नहीं। रामगोपाल शालवाले केवल सांसद न थे अपितु आर्य जगत् के (आर्य समाज के बहुत बड़े नेता व अधिकारी भी थे। उन दिनों हिन्द समाचार और पंजाब केसरी जालन्धर के पत्रों संचालक लाला जगत्नारायण राज्यसभा के सदस्य थे। शालवाले जालन्धर गये तो स्टेशन पर लाला जगत् नारायणजी मिल गये और उन्होंने राष्ट्रपति भवन में मस्जिद बनने की तैयारी शीर्षक मोटे अक्षरों में अपने हिन्द समाचार में छपा यह समाचार शालवाले को दिखाया। फिर तो सारी दिल्ली में यह खबर फैल गई। हिन्दू सांसद और आर्य समाज के नेता लोग और सम्पूर्ण आर्य जगत् इसके विरूद्ध आन्दोलन के लिए तैयार हो गया। प्रधानमन्त्री को अनेक सन्देश इसे रोकने के लिए मिलने लगे। इन्दिरा गांधी इसे सुनकर स्वयं आश्चर्यचकित थी।

यशवन्तराव चव्हाण गृहमन्त्री तथा मोरारजी देसाई ने सांसद रामगोपाल शालवाले को पत्रोत्तर से सूचित किया कि केन्द्रिय मन्त्रिमण्डल द्वारा राष्ट्रपति भवन में मस्जिद बनाने की कोई स्वीकृति नहीं दी गई है ऐसा कुछ नहीं होने दिया जायेगा। प्रस्तावित मस्जिद के निर्माण के सम्बन्ध में झूठा प्रचार किया जा रहा है। इस प्रकार से यह सन्देहशील भेड़िया वृत्ति रुकी। अन्य था चुपचाप यह सब हो जाता।

एक अन्य घटना इसी प्रकार के वातावरण को उजागर करती है – यह घटना नबाब पटौदी के साथ शर्मिला टैगोर के विवाह से सम्बद्ध है। यह लड़की फिल्म अभिनेत्री थी सुप्रसिद्ध महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर जो महर्षि दयानन्द के भक्त थे उनकी प्रपौत्री सुप्रसिद्ध महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगौर की पौत्री है। सुप्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी मुसलमान नबाब

मन्त्र – पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति ते ये इन्द्रे कर्मणा भुवत्।

पहले के बन्धन उसे छोड़ते है, जो प्रभु के निमित्त कर्म से समर्थ होता है। वासना बन्धन का कारण है, जो सांसारिक वासनाओं से वासित होकर कर्म करेगा, वह बन्धन में पड़ेगा। अतः सांसारिक वासनाओं को त्यागो और जब करो, प्रभु के निमित्त करो अर्थात् अपने आपको भगवान् का हथियार बना लो। अब सब इच्छाएं आकांक्षाएं अभिलाषाएं छोड़ दो, जो प्रभु कराये वह करो। प्रभु के कराने से कर्म होने की एक पहचान है – ऐसा कर्मकर्त्ता हानिलाभ से विचलित नहीं हेाता, क्योंकि उसे विश्वास होता है कि प्रभु जो करते है, भला ही करते है। जाने, प्रतीय मान हानि में कोई गहरा लाभ छिपा हो। वेद जीवनभर कर्म करने का ही नहीं, कर्म करते हुए जीने की इच्छा का आदेश देते है–

मन्त्र – कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्मलिप्यते नरे।

।। यजु०४०।२।।

इस संसार में मनुष्य आयुभर कर्म करता हुआ जीने की इच्छा करें। इस प्रकार तुझ में कर्म लिप्त नहीं होंगे अर्थात् कर्म बन्धन कारण नहीं बनेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य काई साधन नहीं है अर्थात् कुकर्म और अकर्म का निषेध किया जा रहा है। कर्म किए बिना रहना प्राणी के लिए सर्वथा असम्भव है। ऐसी दशा प्राणी को अपने कर्तव्य पर विचार करना चाहिए। विचार करके उसपर आचरण करें। कर्तव्य ज्ञान वेद से होगा। वेद भगवान् की वाणी है। वेदानुसार कर्म करनेवाला मनुष्य यह सोचे कि मैं प्रभु के आदेश का पालन कर रहा हूँ। ऐसी निष्ठा भावना से कर्म करनेवाला सचमुच भगवान् का कारण–उपकरण बन जाता है।

प्रभु निमित्त कर्म को निष्काम कर्म भी कहते है। अपना आपा भुलाए बिना यह लगभग सर्वथा असंभव है। अपना आपा भुलाना = आत्मविस्मरण, आत्मसमर्पण के बिना अशक्य है। कर्म की महिमा बताते हुए भी वेद का संकेत उसी ओर है। कोई है जो इस संकेत को ग्रहण करे।

धन्यः स धन्या च तदीया जननी।

विद्यासागर शास्त्री,
सुराज कॉलनी, प्लॉट नं. ४०, अमरावती

***

महर्षि–महिमा

वर्णाः कर्म–गुण–स्वभाव–फलतः मानें वृथा जन्म को।
सेवा जीवित मान्य पूर्वज–हिता, पीछे किया श्राद्ध क्या?
तीर्थं साधुसमागमो न सलिलं, ऐसा लगे मानने।
सर्वैषाः करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।

भावार्थ – ब्राह्मण, क्षत्रियादि वर्ण गुण–कर्म–स्वभाव से माने जाने लगे और केवल जन्म से आधार पर ब्राह्मणादि वर्णों को मानना व्यर्थ समझा जाने लगा। जीवित एवं मान्य पूर्वजों की सेवा करना ही हितकर माना जाने लगा। मरने पर उनके निमित्त से श्राद्ध करने पर आक्षेप होने लगे। गंगादि नदियों के जलों को ही तीर्थ न मानकर उन–उन नदियों के तटों पर रहने वाले धर्मात्मा साधुओं को ही वास्तविक तीर्थ माना जाने लगा। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

– पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति

लोकोऽयं कर्म्मबन्धन

(सम्पूर्ण संसार कर्मों के बन्धन में बंधा हुआ है)

मन्त्र : ओ३म्। मन्त्र मखर्व सुधितं सुपेशसंदधात यज्ञियेष्वा!
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति य इन्द्रे कर्मणा भुवत्।।

ऋग्वेदे ७।३२।१३।।

अखर्वम् = क्षुद्रतारहित, सुधितं = सुचिन्तित, सुपेशसम् सुन्दर रूपरेखावाला, मन्त्रम् = मन्त्र = गुप्त परिभाषित विचार, यज्ञियेषु = यज्ञयोग्य, यज्ञ के अधिकारियों मे आ= पूर्णरूप से, दधात् = डालो, पूर्वी + चन, पूर्व से प्राप्त, प्रतितयः = बन्धन, तम् = उसको तरन्ति = लांघ जाते है, छोड़ जाते है यः = जो इन्द्रे = परमेश्वर के निमित्त कर्मणा = कर्म से, भुवत् = समर्थ होता है।

पता है पाप क्या होता है ? सुकर्म क्या होता है ? मनु महाराज कहते है – नानृतात् पातकं परम्

अर्थात् झूठ से बढ़कर गिरानेवाला पाप कोई नहीं है।

पातक कहो, पाप कहो एक बात है। पातक जितने है, प्राय उनमें दूसरों के साथ संबन्ध अवश्य होता है। हिंसा जब तक हिंस्य न हो नहीं हो सकती। बोलना दूसरे के साथ होता है, मिथ्या = बोलने में भी दूसरे की श्रोता की आवश्यकता पड़ती है।

चोरी पराये माल की होती है। ब्रह्मचर्य नाश करने में दूसरा चाहिये। दूसरा न होतो अभिमान क्या और किसके आगे करें। पाप के आचारण से पहले पाप का विचार होता है। विचार अपने मन में होता है, उसको वाणी से बोलकर दूसरों तक पहुँचाते है।

वेद कहता है – विचार हर एक को न दो किन्तु दधात यज्ञियेष्वा = जिसमें परोपकार भावना है – यज्ञ भावना से जो भावित है, ऐसे सदाचारी महात्मा सज्जनों को विचार दो।

किन्तु वह मन्त्र = विचार क्षुद्र न हो क्षुद्र विचारों से संकीर्णता पैदा होती है, **उससे स्वार्थ उत्पन्न होकर समाज–भावना का विनाश होता है। उच्चाशय के भावों से भरपूर विचार ही संसार के लिए कल्याणकारक होते है। साथ ही वह सुधित=सुचिन्तित होना चाहिए। ऐसा नहीं कि जो विचार आया, झट उसे उच्चारण कर दिया। नहीं, उसके लिए सोचिए,** उसके अनुकूल प्रतिकूल सारे पहलुओं पर गम्भीरता से विचार कीजिए। जिसको विचार देने लगों, देखलो कि उसने उस विचार को भली भाँति धारण कर लिया है। समझ लिया है, अन्यथा वह अपनी अधम बुद्धि से हानि करेगा। जब कोई विचार देने लगो, उसकी भाषा ललित हो, उसके समझाने का प्रकार मनोहारी हो। उस विचार को इस रूप में जनता के आगे रखों जिससे वह स्वयं आकृष्ट हो। सुन्दरता सभी को प्रिय है। भगवान् भी सत्य और शिवसुन्दर है। वेद के शब्दों में भगवान् भी सत्य और शिवसुन्दर है। वेद के शब्दों में भगवान् स्वः = अस् सुन्दर सत्तावान है। भगवान ने इस सृष्टि में कितना सौन्दर्य भर दिया है, यह सृष्टि रूपवती बनाई। तुम क्यो कुरूप सृष्टि रचो ? तुम्हारी सृष्टि भी सुन्दर होनी चाहिए।

जब विचार किसी को देने लगते हो वह कर्म हो जाते है।

कर्मों को अनेक ज्ञानी बन्धन का हेतु मानते है। कुछ सीमा तक यह बात भी सत्य है। पशु पक्षी कीट पतंग आदि जो अधम योनियों में पड़े, ज्ञान प्रकाश से रहित हुए विवशता का जीवन बिता रहे है। और अनेक दुःख भोग रहे है, यह क्यों ? जब उन्हें कर्म की स्वतन्त्रता, तब उस स्वतन्त्रता का दुरूपयोग करके कुकर्म किए, उसका फल यह दुर्दशा है। कर्म से बन्धन मिला, कर्म से ही वह कटेगा अतः वेद कता है –

पौदी साथ उसका विवाह तय हुआ। शर्मिला इस्लाम में दीक्षित की गई और उसका नाम बदला गया। इस घटना का देशभर के समाचार-पत्रों में खूब प्रचार किया गया। मुस्लिम रीति-रिवाज के अनुसार यह विवाह सम्पन्न हुआ। इस विवाह पर बहुत से (मुख्यतः उस समय के भेड़ियां मनोवृत्ति के कांग्रेसी नेता) प्रसन्न थे और नबाब के नई दिल्ली स्थित निवास स्थान पर बड़े स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। उस समय डा. जाकिर हुसैन भारत के राष्ट्रपति थे। वे तथा श्रीमती इन्दिरा गान्धी इस समारोह में आमन्त्रित किए गए। इन दोनों ने समारोह में सम्मिलित होना स्वीकार किया। लोकसभा के कुछ कांग्रेसी सदस्यों ने रामगोपाल शालवाले व अन्य आर्यो को बताई। उन्होंने यह भी बताया कि एक फिल्म के प्रदर्शन का भी आयोजन किया गया। इस बात से आर्य सांसदों को तथा आर्य समाजियों को बड़ा कष्ट हुआ क्योंकि ये लोग भेड़ियां मनोवृत्ति के कार्यों को सुनकर इनके हृदय को ठेस पहुँचना स्वाभिविक है फिर प्रधानमन्त्री व राष्ट्रपति के आने से धर्म परिवर्तन करनेवाले मुसलमानों को संरक्षण मिलता है और हिन्दुओं के हितों पर कुठाराघात होता है।

सांसद शालवाले ने राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री को पत्र लिखने का विचार किया कि यदि ये दोनों इस स्वागत समारोह में भाग लेंगे जो एक हिन्दू लड़की के मुसलमान के साथ शादी से सम्बद्ध है, तो इसका देश के युवकों पर दुष्प्रभाव पडेगा। इस प्रकार का निश्चय करके लालाजी तुरन्त सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में पहुँचे और राष्ट्रपति के निजी सचिव को फोन किया। राष्ट्रपति जयपुर गये थे। शालवाले ने कहा जब वे आजावें तब सार्वदेशिक सभा कार्यालय से बात करने को कहना कि सांसद का फोन आया है और मेरी तरफ से निवेदन भी करना कि वे इस स्वागत समारोह में शामिल न हों।

सन १९७६ में इन्दिरा गान्धी की सरकार ने तथा कुछ राज्यों की सरकारों ने अपनी भेड़िया मनोवृत्ति के अनुसार देश भर में हिन्दुओं को परिवार नियोजन के नाम पर जबरदस्ती करके अपमानित किया और मुसलमानों से डर कर मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति अपनाई। जिसके कारण आज भी दो प्रकार के कानून है। हिन्दू कोड बिल के अनुसार हिन्दू दो शादी नहीं कर सकता। आम लोगों को उस समय सताया गया लोग यात्रा में जाते हुए भी डरते थे किसी में सरकार के खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं की। इन्दिरा गान्धी ने एमरजेंसी लगाकर विपक्ष के नेताओं को जेलों में ठूंस दिया। सर्वोदय नेता जयनारायण, चरणसिंह, पूर्व प्रधानमन्त्री, प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी, गृहमन्त्री लालकृष्ण आडवानी, राजनारायण, मनीराम बागडी, चौधरी देवीलाल, पूर्व उपप्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह, श्री चन्द्रशेखर पूर्व प्रधानमन्त्री, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, बलवन्तराय तायल पूर्व वित्तमन्त्री हरियाणा, स्व. पूर्वमन्त्री वीरेन्द्रसिंह आदि हजारों नेतागण रातों रात जेलों में बन्द कर दिए। समाचार पत्रों पर तथा पत्र व्यवहार डाक आदि पर सेंसरशिप लागू कर दी गई और अंग्रेजों से भी बदतर जुल्मों सितम ढाए गए। सरकार के विरूद्ध न लिखे यह चेतावनी दी गई जिसका परिणाम यह हुआ सारे देश में भेडियां मनोवृत्ति के शासकों, अधिकारियों के विरूद्ध देशव्यापी रोष व्याप्त हो गया। लोगों ने राजनारायण जैसे साधारण समाजवादी विचारधारा के नेता द्वारा लोकसभा चुनाव में इन्दिरा गान्धी को बुरी तरह पराजित कराकर प्रमाणित कर दिया कि इन्दिरा गान्धी द्वारा एमरजेंसी लागू करना भेड़िया मनोवृत्ति का परिचायक था।

- इति शम -

लेखक : **विद्यासागर शास्त्री,**
सुराज कॉलनी, प्लॉट नं. ४०, अमरावती

क्रमशः

।।ओ३म्।।

स्वमार्यम - कृण्वन्तोविश्वमार्यम।
गणपतीचे स्वरूप..... कसे आहे ?

वेदांची मान्यता बहुतांश लोकात व पौराणिक बंधु भगिनी मध्ये असते आणि आहे. वेद हे ईश्वरीय ज्ञान आहे अशी विद्वानाची मान्यता आहे. पण स्वार्थ आणि लालुच ह्या मनुष्याच्या प्रवृत्तीमुळे वेद ज्ञानाचा लोप होत आहे व काही विद्वानच करीत आहेत. हे विनाशाकडे जाणे म्हणजे विपरीत बुद्धि होणे हे देशाचे दुर्दैव होय. वेदप्रचारा अभावी अेक हिंदी क्रांतिकारी कवि ने म्हटलेच आहे कीं.....

ये वेद विरूद्ध जब मत फैल,
पत्थर पुजा जारी हुअी।
वेद ज्ञान जब लुप्त हुआ।
तो ज्ञान का पाँव जमा न रहा।

आजचा मनुष्य अंधारात आहे. गणपतीवर श्रद्धा ही आहे पण ज्ञाना अभावी अंध श्रद्धेने गुरफटलेला आहे. त्यामुळे अनेक समस्या व अनेक विकृती निर्माण झाल्या आहेत. त्यामुळे आज समाजाचा व्यर्थ वेळ व पैसा ही खर्च होत आहे. सर्व सत्य विद्या आणि जे पदार्थ विद्येने जाणले जातात त्या सर्वाचे आदि मुळ परमेश्वर आहे. ईश्वराचा साक्षात्कार ज्यांना झाला, जाणला ते विद्वान म्हणतात ईश्वर सच्चिदानंद स्वरुप, निराकार, सर्व शक्तीमान न्यायकारी, दयाळू, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादी अनुपम, अजर, अमर, सर्वाधार, सर्वेश्वर, नित्य सर्वव्यापक, अभय, पवित्र आणि सृष्टीकर्ता आहे. त्याचीच उपासना करणे योग्य असल्याचे आर्य समाजाच्या दुसऱ्या नियमात सांगितले आहे. दोह्यातही म्हटले आहे....

जड पूजा से बुद्धि जड, होती निश्चय जान।
पत्थर पूजे से नही, मिल सकता भगवान।।

ह्या व्यतिरिक्त जे अन्य उपासना करतात ते नास्तिक, अवैदिक व अज्ञानी जाणावे.

वेद सत्य विद्येचे प्रेरक पुस्तक आहेत. ते शिकणे शिकाविणे, ऐकणे ऐकविणे सर्वाचे कर्तव्य आहे. पण आज त्याकडे मनुष्याने पाठ फिरविली आहे.

वेदात.... गणानां त्वा गणपतिं हवामहे।
प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे।
निधिनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम।
अहमजानि गर्भधमा त्वम जासि गर्भधम।

हा यजुर्वेद अ. २३ मं १९ मधील विचार आहे. ह्यात गणानां त्वा ह्या अर्थ असा की, जो परमात्मा गणना करण्या योग्य पदार्थाचा पति म्हणजे पालनकर्ता आहे. त्वा म्हणजे त्याला हवामहे म्हणजे पुजनिय बुद्धिने ग्रहण करतो. प्रियानां म्हणजे जो आपला इष्ट मित्र आणि मोक्षाचा प्रिय पति असून आम्हाला आनंदात ठेवून आमचे नेहमी पालन करतो. त्यालाच आम्ही उपासना योग्य देव म्हणून स्विकार करतो.

निधिनां त्वा म्हणजे जो विद्या आणि सुख इ. चा निधि म्हणजे आमच्या कोषाचा (खजिन्याचा) पती आहे. त्याच सर्व शक्तीमान परमेश्वराला आम्ही आपला राजा आणि स्वामी मानतो जो व्यापक बनून सगळ्या जगात वसलेला आहे. आणि सर्वजग त्याच्यातच वसलेले आहे. म्हणून त्यालाच वसु म्हणतात.

हे वसु परमेश्वरा ! तूं तुझ्या सामर्थ्याने जगाच्या अनादी कारणात गर्भ धारण करतोस म्हणजेच सर्व मुर्तिमान

द्रव्यांना तुच उत्पन्न करतोस त्यामुळे तुझे नाव गर्भध आहे. आहमजानि म्हणजे तु गुणवान आहेस हे आपण जाणावे. आ त्वा म्हणजे जसे तूं सर्वांना सर्व प्रकारे जाणतोस तसेच मला ही सर्व ज्ञान युक्त कर. पुन्हा दुसऱ्यांदा गर्भध हा शब्द आला आहे. तो याच साठी की, जे प्रकृति आणि परमाणू इ. कार्य द्रव्याचे गर्भ रूपी आहेत. सर्व जगाच्या गर्भरूपी बीजाला धारण करणारा ईश्वराहून भिन्न असा जगाची उत्पति, स्थिती आणि लय करणारा दुसरा कुणीही नाही.

स्त्रियांनी राज्य पालना साठी आपल्या मुलांना संस्कारमय योग्य शिक्षणात व गृहकत्यात दक्ष व व्यस्त राहावे. ज्यांना हा (विद्या) यज्ञ प्राप्त झालेला असून ही त्या संतानोत्पती इ. कर्म करताना मिथ्याचरण करतात त्यांना विद्वानात मान्यता असत नाही देत नाहीत. विद्येच्या रक्षणाने आत्मा, शरीर, बल सिद्ध करावे जी माणसे परमेश्वरीच उपासना करतात त्याचे बल, बुद्धि, इ. गुण कधी नष्ट होत नाही. हे गणेशा ! बुद्धि दात्या सर्वांचा निर्माता तूच असून जे तुझे निर्माते बनले त्या अज्ञानी जनाना सद्‌बुद्धि प्रदान कर. हिच तुझ्या चरणी नम्र प्रार्थना.

अति ओ३म् खं ब्रह्म।

आधार - वरील विचार ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रंथ म. दयानंद लिखित हिंदी माध्यमातील मातृभाषेत लिहले आहेत.

रामभाऊ मुंगे गुरुजी
मंत्री, आर्य समाज
महर्षी दयानंद नगर, उमरेखड,
जि. यवतमाळ (महा.)-४४५२०६.

***

वेदऋचा कुणी रचल्या?

अमरावती शहरातून प्रकाशित होणारे सर्वात जुने व दर्जेदार वर्तमानपत्र दैनिक हिन्दुस्थान आहे. साम्प्रत या दैनिकातून प्रत्येक बुधवारी वेदावर बोलू कांही ही लेखमाला प्रकाशित होत आहे. ऋग्वेदाचे अंतरंग म्हणून प्रत्येक मण्डला मध्ये किती सूक्ते व किती ऋचा आहेत लिहून त्या कुणी रचल्या हे सुद्धा लिहित आहेत. यावरून हे सिद्ध होते की वेदातील ऋचा वेगवेगळ्या लोकांनी रचलेल्या आहेत. त्यात भारतातील नदी पर्वतांची ऋषि-मुनीची-राजे महाराजे लोकांची नांवे आहेत व अनेक कथा आलेल्या आहेत.

डॉ. उमाकांतजी बोडखे यांच्या लिखाणातून वेदांचेअपौरुषयल व प्राचीनत्व या दोन बाबी सिद्ध होत नाहीत. वेदांचा काळ कीती प्राचीन आहे हे स्पष्ट होत नाही. आतापर्यन्तच्या यांच्या लिखाणावरून वेदांचे नावे सार्थक होत नाहीत.

अमेरिकेच्या सांस्कृतिक विभागाने ऋग्वेदाला, जगातील सर्व जुने पुस्तक म्हणून मान्यता देऊन वाचनालयात पहिल्या स्थानावर ठेवले आहे. जगातील अधिकांश विद्वान वेदांना सर्वात प्राचीन ग्रंथ मानतात.

डार्विन चा विकासवाद वेदाच्या आधारे सिद्ध होत नाही. प्रारंभी प्रो. मॅक्समूलर ला ही, वेदमंत्राचा अर्थ करता येत नव्हता. तेव्हां म्हणायचा की वेद धनगर लोकांचे गाणे आहेत. अर्थात अर्थहीन आहेत. परंतु त्यांनी महर्षि स्वामी दयानंदानी लिहलेली ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका वाचली. तेव्हां त्याचे डोळे उघडले व तो म्हणाला -

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले
तावत् ऋग्वेद महिमा लोकेषु प्रचरिष्यति

जो पर्यन्त नद्य आणि पर्वत राहतील तो पर्यंत ऋग्वेदाची महिमा वाढत जाईल.

वेद वैदिक भाषेत आहेत. लौकिक संस्कृतात नाही. पाणिनीय व्याकरणाने वेदमंत्राचा अर्थ करता येत नाही. कारण तीन हजार वर्षापूर्वी पाणिनी मुनी ने अष्टाध्यायी नावाचा व्याकरणाचा सर्वोत्तम ग्रंथ लिहिला आहे.

वेदमंत्र, अर्थात ऋचा, छन्दोबद्ध आहे. ह्रस्व, दीर्घ, छुत, व अ हा वर्ण अठरा प्रकारे वापरला असून उदात्त, अनुदात्त, स्वरित या उधारणासहित लिहिलेला आहे. जसे अध्यापकपुत्रः शब्द आल्यास कोणता समास होईल ? अध्यापकस्य पुत्रः अथवा, अध्यापकःपुत्र यस्य सः अध्यापकाचा मुलगा? किंवा अध्यापक मुलगा आहे ज्याचा असा तो, षष्ठी तत्पुरूष व बहुश्रीहि असे दोन्ही समास होतात. परंतु फरक उदात्त, आणि अनुदात्त स्वरावरून समजेल.

वेदांत आलेल्या प्रत्येक मंत्रावर, ऋषि, देवता, आणि छन्द लिहिलेले आहे. ज्या मंत्राचा किंवा सूक्ताचा विशेष अर्थ ज्यांनी सांगितला त्याला ऋषी, आणि, मंत्रांत जो विषय असेल त्याला देवता म्हटले आहे. छन्द, जसे अनुष्टप, जगती, गायत्री, वगैरे पंतंजली ऋषि ने योगदर्शन लिहले आहे. योगासने पूर्वीपासून भारतीय करीत होती परंतु बाबा रामदेवजींनी विशेष प्रयास करून प्रचार केला. अतः त्यांना योगऋषी म्हणतात.

वेदांचा लौकिक भाषान्तर, रावण, उव्वट, महीधर, सायणाचार्य, मॅक्समूला स्वामी दयानंद, पं. सातवळेकर अनेक विद्वानांनी केलेला आहे. अधिकांश पंडित विद्वानांनी वेदांना अपौरुषेय मानले आहे. जसे -

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानिज्ञज्ञिरे।
छन्दाएसिजज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।।यजु०अ०३१मं०७)

अर्थ - (तस्माद् यज्ञात् सः। सत् ज्याचा कधी नाश होत नाही. चित् जो नेहमी ज्ञानस्वरूप आहे. ज्याच्या ठायी अज्ञानाचा लवलेश ही नाही. आनंद जो नेहमी सुखस्वरुप असून सर्वांना सुख देणारा आहे. अशा लक्षणांनी परिपूर्ण पुरुष (परमात्मा) जो सर्वस्थानी व्यापक आहे. सर्व माणसांनी ज्यांची उपासना करावी असा सामर्थ्यशाली इष्ट देव आहे त्याच परब्रह्मापासून (ऋच) ऋग्वेद, (यजुः) यजुर्वेद, (सामानि) सामवेद व (छंदासि) अथर्ववेद निर्माण

झाले आहेत. अथर्व वेदातही याच अर्थाचा मंत्र आलेला आहे.

वेदात आलेली नांवे, जसे, जमदग्नि, कश्यप, भार्गव, कृष्ण ही ऋषि, मुनि, लोकांची नाहीत. वेदातील शब्दावरून लौकिक नांवे ठेवण्यात आलीत. जसे : त्र्यायुषंजमदग्ने, कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्वेवेषु त्र्यायुषम् तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्।। इथे, जमदग्नि, आणि कश्यप ऋषीची नांवे नाहीत. शतपत ब्राह्मण ग्रंथात सांगितले आहे. चक्षुर्वे जमदग्नि। डोळ्यांना जमदग्नि म्हणतात. कश्यपो वै कूर्म। कासवाला कश्यप असे म्हणतात.

वेदात आलेले शब्द रुढीयुक्त नाहीत. ते यौगिक आहेत. एका शब्दाचे अनेक अर्थ होता व अनेकार्थी शब्द एका अर्थाचा बोध करतात. वेद मंत्राचा अर्थ लावणेकरिता, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त आणि छंद ही वेदांची सहा अंगे असून ह्यांचा अभ्यास केल्याशिवाय अर्थ लावणे हास्यासपद होतो.

वेदात इतिहास नाही. इति, ह, आस, अर्थात असा तो होता. इतिहास झालेल्या लोकांचा लिहिला जातो. वेद मनुष्यनिर्मिती बरोबर च परमेश्वराने दिले आहेत. यजुर्वेदात आले आहे. कृष्णायाः पुत्रोऽर्जुनः साधारण संस्कृतज्ञ याचा अर्थ करतो (कृष्णा) म्हणजे द्रौपदी तिचा पुत्र (मुलगा) अर्जुन, हा अर्थ बरोबर आहे कां? कुणीही म्हणेल की बरोबर नाही. तर इथे कृष्णा-शब्दांचा अर्थ आहे रात्री आणि अर्जुन शब्दाचा अर्थ आहे सूर्य, सरलार्थ रात्रिचा मुलगा सूर्य। या प्रमाणे वेद अपोंरुषेय असून त्याच्यात इतिहास नाही. अनेक अलंकारांचा व सहस्यात्मक कथानकाद्वारे अर्थ स्पष्ट करण्यात आला आहे.

पं. सत्यवीर शास्त्री
एम.ए. कालीदास संस्कृत साधना पुरस्कार प्राप्त
प्रशांत नगर, अमरावती.

***

महर्षि-महिमा

सर्वेशोऽस्ति समग्र-विश्वजनकः, बेटा किसी का नहीं।

सर्वास्ता अवतार-धारण-कथाः, गप्पें बताने लगे।।

पाषाणादिक मूर्त्तयः कृतिकलाः, देवत्व जाता रहा।

सर्वैषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।

भावार्थ – महर्षिके प्रचार का प्रभाव यह हुआ कि लोगों केविचार पलटने लगे कि परमात्मा सारे संसार का पिता ही है, किसी का पुत्र नहीं है। परमात्मा के अवतार धारण की सारी कथाओं को गप्पें समझा जाने लगा। पत्थर, धातु, मृतिका तथा काष्ठ की बनी मूर्तियाँ कुशल शिल्पियों की कार्य-निपुणता का स्वरूप मानी जाने लगीं। उनमें से देवत्व की भावना जाती रही। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

– पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति

ऋचा कुणी रचल्या?

पूजनीय प्रातःस्मरणीय स्व. बाळासाहेब मराठेनी सुरू केलेल्या दैनिक हिंदुस्थात प्रती बुधवार वेदावर बोलूं काही ही लेखमाला प्रकाशित होत आहे. वेदांना हिंदू धर्मीय धर्मग्रंथ मानतात. वेद ईश्वर प्रणीत आहे. ही भावना प्रत्येकाच्या हृदयात भरलेली आहे. भारतातील साधु-संताचे दोन भाग पडतात. प्रथम हे महान पुरूष ज्यांनी संस्कृत भाषा आत्मसात करून वेद शास्त्रांचा अध्ययन करून लोकांना प्रबोधन केले आहे. दुसरे ते साधू-संत ज्यांना संस्कृत-भाषेचा, वेद-शास्त्रांचा काही अपरिहार्य कारणांनी अभ्यास किंवा अध्ययन करता आले नाही. ज्ञानेश्वर महाराज ज्ञानेश्वरी ग्रंथाचा आरंभ करतांना लिहतात.

ॐ नमोजी आद्या, वेदप्रतिपाद्या अर्थात ज्या परमेश्वराने वेदांचे प्रतिपादन केलेले आहे जो सर्वांचा अगोदर होता. त्या ईश्वराला मी नमन करतो. भगवान परशुराम संपूर्ण जगाला आव्हान देत होते. हिम्मत असेल तर या समोर शास्त्रार्थ करा! किंवा लढाई करा! नाहीतर पराजय स्वीकार करा. त्याच्याच शब्दामध्ये अग्रतश्चतुरोवेदापृष्टतः सशरं धनुः इदं शास्त्रं द्वदं ब्राह्मं शापादपि शरादपि।

वेदानंतर लिहिली गेलेली धार्मिक ग्रंथे, आरण्यके, ब्राह्मणग्रंथ, उपनिषदे, मनुस्मृती, नीतिपरग्रंथ, अठरा-पुराण व अठरा उपपुराण या सर्वांनी वेदांना ईश्वरप्रणीत मानलेले आहे. सर्वेषां नामानि कर्माणिच पृथक् पृथक! वेदश द्वेभ्यश्चादौ संप्स्थाप्य पुनः पुन। मनु अर्थात वेदात जी नावे, ऋषि, मुनी राजे व इतर लोकांची आलेली आहेत. ती वेदांवरूनच ठेवलेली आहेत. वेदांत कृष्ण शब्द आला आहे. यांचा अर्थ असा नाही की, कृष्ण भगवान अगोदर झाले व नंतर वेद लिहिले गेले. वेद निर्मितीचा काळ १,९६,०८,५२,९,७६ वर्ष जूना आहे. वेदांत कुणाही ऋषि-मुनी-राजे-महाराजे यांचा इतिहास नाही. कुठे-कुठे अतिशयोक्ती अलंकार युक्त ऋचा आहेत. वेदांत अजेन यज्ञेत् असे आले आहे. अज यांचा अर्थ बकरा केल्यास, बकऱ्याचे बळी देऊन यज्ञ करावा असे होईल. परंतु अज शब्दांचा अर्थ न जायते इति अजः जो उगवत नाही तो अज. धान्याला भाजल्यास ते अज होतात. प्रकरणानुसार, तीळ, गहू, उडीद, मूंग यांची आहूती देण्याचा विवान आहे.

वेदात इंद्र शब्द आला आहे. इंद्र शब्दाचे चौदा अर्थ आहेत. फक्त देवांचा राजा इंद्र समजून अर्थ करणे चुकीचे आहे. उदाहरणार्थ -

इन्द्र्र।थमत्रं वरूणमग्निमाहुः अथो दिव्ययःस पुर्णो गुरूत्मान्।
एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति, अग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः।।

ऋग्वेद, १,१४,६,४६

अर्थात तो जो महान भव्य, दिव्य असा परमेश्वर आहे त्या परमेश्वराला वेदज्ञ (सद्) सदैव चिंतनशील वेदवेत्ता ब्राह्मण लोक अनेक नावांनी त्याची उपासना करतात. त्याचे आवाहन करतात. इंद्र, मित्र, वरूण, अग्नि, यम, मातरिश्वा, गुरू ही त्या एकाच परमेश्वराची नावे आहेत. जशी विष्णु सहस्९नामामध्ये विष्णुचे एक हजार नावे आहेत.

वेदांत इतिहास नसून फक्त ज्ञान आहे. वेद शब्द संस्कृतच्या विद्=ज्ञाणे या क्रियापदापासून तयार झालेले आहे. ऋग्, शब्द ऋ-गतौ, यजु-शब्द-यज्-यजणे, साम-संगीत, अर्थ-अर्थयते-असे तयार झाले असून त्यांचा अर्थ-सर्वप्रकारचे ज्ञान असलेले ग्रंथ असे होते. वेदभाष्यकार सर्वात प्रसिद्ध सायणाचार्यांनी वेदातील प्रत्येक शब्दांचे आध्यात्मिक आधिदैविक व आधीभौतिक असे तीन अर्थ केले आहेत व इतिहासपुराणाभ्याम् वेदार्थ उपबृंहधयेत या उक्तिप्रमाणे उदाहरण देऊन वेद ऋचांचा अर्थ कराव. उदाहरणे देत असतांना, उदाहरणे हे सदैव सत्य नसतात. कधी काल्पनिक किंवा ऐतिहासिक असतात. आद्य शंकराचार्य म्हणतात-ऋग्वेदादिजे चार वेद अनेक विद्या व ज्ञानाने

परिपूर्ण आहेत. सूर्याप्रमाणे ते सर्व सत्याचे प्रकाशक आहेत. त्यांचा रचयिता सर्वशक्तीमान परब्रह्म परमेश्वराच आहे. वेदांत काय आहे. याचे वर्णन परमेश्वराने स्वतः निर्देशित केले आहे.

ओश्म-स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां, पावमानी द्विजानामायुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिक द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।

मत्रांत द्विजः शब्द आहे. याचा अर्थ फक्त ब्राह्मणच नाही. तर व्दिःजायते इति द्विजः ज्याचा दोनदा जन्म होतो. त्या सर्वांना द्विज म्हणतात. एकदा आईच्या उदारातून नंतर व्रतबंध (उपनयन) संस्कार झाल्यानंतर आचार्याच्या ज्ञानगर्भातून ज्ञान मिळविल्यामुळे ब्राह्मणांना द्विज म्हणतात. पहिले निघालेले दांत आठव्या-नवव्या वर्षी पडून पुन्हा नवीन निघतात म्हणून दातांना द्विज म्हणतात. पक्ष्यांना द्विज म्हणतात. एकदा अंउरूपाने जन्म होऊन नंतर फुटून पिलं बाहेर येतात. म्हणून पक्ष्यांना द्विज म्हणतात. वेदांना वेदमाता म्हटले आहे. माता संगोपन संवर्धन संरक्षण करणारी आहे. ईश्वराने निर्माण केलेल्या जगतामध्ये मानव हाच जीव बुद्धिवान आहे. त्यानेच वेदांचे अध्ययन करून सर्व प्राणीमात्रांचे आईप्रमाणे संरक्षण करावे. माकाश्चिद् दुःखभाग् भवेतः याकरीता मंत्रात प्रजा आणि पशु असे दोन शब्द आलेत. इतर जीवप्रमाणे मानवांना सुद्धा पशु म्हणतात. पश्चति इति पशुः जो डोळ्यांनी पाहतो तो पश, वेदात, आयु (वय) प्राण, धन, संपत्ती (ब्रह्मर्चस) अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी, यांची संपूर्ण माहिती, इहलोक आणि परलोक मिळविण्याचे ज्ञान, मनुजांना आवश्यक असलेल्या पर्व विद्या (मया) मी परमेश्वराने (स्तुता) प्रस्तुत केलेल्या आहेत. त्या अवगत करून ऐहिक जीवनाचा सुख भोगून परमानंद प्राप्तिकरीता मोक्ष मिळवावा. वेदमंत्राच्या वर आलेली नावे व त्यांचे रूढीवादी अर्थ करून त्यांनी वेदमंत्राचे लिखाण केले आहे असे समजणे योग्य नाही. वेद अपौरूषेय व ईश्वरनिर्मित आहेत.

पं. सत्यवीर शास्त्री
अमरावती

***

महर्षि-महिमा

दीक्षाम्प्राप्य वरान् गुरोर्मधुपुरे, दंडी महाराज से।
पाखण्डोच्चय खंड-खंड करणी, गाड़ी ध्वजा कुम्भ में।।
ध्वस्ताऽनर्थकरी प्रपंच करिता, सत्यार्थ-धारा बही।
सर्वैषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।

भावार्थ – श्री गुरु दंडी विरजानन्द जी महाराज से दीक्षा तथा वरों को प्राप्त करके, पाखण्ड के समूह को खंड-खंड करने वाली ध्वजा हरिद्वार में कुम्भ के मेले पर (सं. १९२४) में गाड़ दी और प्रचार प्रारम्भ कर दिया। इसके प्रभाव से अनेक अनर्थ करने वाली, छल-कपट द्वारा भ्रमजाल फैलाने वाली, पाप की नदी नष्ट-भ्रष्ट हो गई और सत्यार्थ की धारा बहने लगी अर्थात् सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार होने लगा। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

– पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति

लाभली आम्हा बाबांची कृतार्थता
स्मरण
भाई प्रभाकरराव विश्वनाथ सावरकर

या महाराष्ट्राच्या भूमीत अनेक थोर विचारवंत, साहित्यीक होऊन गेलेत शाहू, फुले, आंबेडकरांच्या विचारांची कास धरुन जीवन जगणारे त्यापैकी एक माझे बाबा भाई प्रभाकरराव सावरकर.

परिवर्तन हा निसर्गाचा नियम. निसर्ग नियमानुसार बाबांना जावून आज एक वर्ष पुर्ण होत आहे त्यांच्या आत्म्याला चिरकाल शांती लाभो हीच प्रभुचरीणी प्रार्थना.

त्यांच्या विचाराची कासधारा आम्ही सगळे बहिण भावंड, सगे सोयरे, आप्तपरिवार आचरणात आणू समजापर्यंत पोहण्याचे काय करु ते नेहमी म्हणत थांबला तो संपला. थांबायचे नाही चालत राहायचे दु:खातही चालत राहायचे. ते नेहमी म्हणायचे असावांना मोल आहे ढाळू नये कधीही वाटवंटी शिंपल्यांना वेचू नये कधीही.

त्याची दिव्यदृष्टीची विचारसरणीची उणीव आम्हा सर्वांना तर होईच आहे. तसेच राजकीय, सामाजिक, क्षेत्रातील लोकांना त्याची उणीव जागोजागी भासत आहे. परंतु त्यांची मुर्ती आम्हा डोळ्यासमोर ठेवून सतत कार्यरत आहोत.

माझे बाबा ऐश्वरात जन्मले निष्ठेत वाढले, निष्ठेत जगले त्यातूनच उजळून तजे घडले ते लोकनेतृत्व!

नेतृत्वाचे सदगुण बाबांच्या बोलण्यात वागण्यात, चालण्यात अनू पेहरावात होते. त्यांच्या सदगूणांच्या कौशल्याने ते जनमानसाचं नेतृत्व करणारे समर्थ लोक नेते ठरले. खरा जाणतेपणा हा असाच असतो ती आम्ही सर्व भावंडांनी जाणला, अनुभवला, आणि आचरणात आणला.

बाबांचा स्वभाधर्म हा काळ्या मातीशी संलग्न् आहे. मातीचा सुगंध हा त्यांच्या स्वभाव वैशिष्ट्यांतील विंतनशील गाभा आहे. या अर्थाने म्हणजे की बाबाच मन सदैव गांभीर्य शोधत असतं. संत विचाराच शोध घेत जात तर कधी सामान्य माणसाच्या घाम थेंबाचा अफाट सागर कसा उभा राहतो हे सांगत. त्याचे बैठकी बोलुण हे मातीपरीक्षणातून मातीील गुणधर्म जसे तज्ञ उचल करुन सांगतात तशीच कडल बाबांच्या बोलण्याची बोलण्यातील वाक्यरचनेत होती त्याची अष्टपैलु भाषा, त्यांच्या स्वभाव वैशिष्ट्यातील चैतन्य आहे- त्याच्या भाषेत कधी कधी परखडपनणा इतरांना जागणवतो. त्या परवडत शब्दात जे शाश्वत मृत्य असतात. त्या शाश्वत मुलांचा उलगडा करतात ती माणसं बाबांना समजू शकली हाच लोकहारी जगण्याचा जाणतेपण आई जाणीव, जगण्याची जिज्ञासा निर्माण करण्याचे सामर्थ नेतृत्वत असल की लोकसमुहास ह्या नेतृत्वाविषय भितीयुक्त आदर निर्माण होते आदरणीय बाबांची अशी ही मुद्रा.

समाज समुहाची परिवर्तनशील मुळभूतना अनुभवायची असेल तर ती बाबांच्या बैठकी चर्चेत अनुभवता यायची आला गेला त्याला समावपचाराने चार शब्द सांगतात त्यांच्या हृदयांचा आवाज किती खोल जातो हे त्याला कळत. त्याला काळनुरुप धन्यता लाभेते हे मात्र खरे ही आमची अनुभुती आहे. या काळ्या मातीशी जन्माची गाठ बांधुन जन्मालं आले. ते माझे बाबा जिथ जन्मला आहे. तेथे अगवले त्या मातीत फुलंल एका दाण्यातुन बहुदाण्याचे ठसठसीत कणुस, ओंबी, शेंग.... भरभरुन येतात. एक तीळ सातजण खातात ही वास्तवकता आहे .... कापूस पिकतो, कापसाची वात लखलख प्रकाश तेवीते देवघरातली निराजन! अशी बहूजनांची सदुपयोगी वृत्ती लांडी, लबाडी करील त्याला तोंडवर पाडीत, अशी संरक्षक सहानुभुती ती अवधी धन्यता बाबांच्या कर्तृत्वात होतो.

आचार, विचार, दृष्टी, सौंदर्य अन चारित्र आणि त्या चारित्राच वैभव बाबांच्या आयुष्यात भोगलं, तसं हे त्याच वैयक्तिक सौंदर्य तेच स्वर्गीय लावण्य !

आज बाबा असते तर त्याची सृजनशील लाभली असती... अन्न त्यांनी समर्थपणे आमच्या पाठीवर शाबासकीची थाप पडली असती.... त्याची आठवण आम्हास आली नाही काय करावे स्वर्गीय लावण्य! आमचं आदर्श होत ते!

ते नेहमी म्हणत –

आपलु मरण, ना देखे सरण
भागील जगण चंदनाचं ...!
जिभेचे चोचले, दिल्या घेतल्याचे
सग्या सोयऱ्याचे, बुडबडे...!
मस्तकी बासिंग हातीचे कंकण
मोजून, मुखवटी
रक्ताचा जिव्हाळा, देवाचा देव्हारा
भावकी पसरा, गंधमक्ती...!
आपुली कहाण, आपुलीया पाया
थेरडीची माया, लोण्यापरी...!
जिभेचे बोलणं, जिभेवर राहे,
तिथे झिरावाह, अमृताचा...!
कुठल्या आभाळी, भुवरच तिर्थ
पुर्वजाशी अज, कळे कैसा...!
पाण्यावरी दिवे, पाजळतो होत
खाते पिते त्रत्रत्र, अलहिदा...!
पेटलेली चिता, विझीती आसू
खरे नासे, तसू, आकमात...!

समाजात राहून कवेळ माणुसकीने काम करणारी माणसं आजकाल दुर्मिळ आहेत. देव, देश आणि धर्माला श्रेष्ठ माणून जात, पात, धर्म, भाषा, यापलीकडे जावून शेतकरी चळवळीत काम करणारे माझे बाबा भई प्रभाकरराव विश्वनाथराव सावरकर यांच्या जीवन कार्यावर यशोचित प्रकाश टाकणारा हा लेख भविष्यात पुढल येणाऱ्या पिढीत काम करण्याची निश्चित प्रेरणा देणारा ठरेल...

त्यांचा निर्वानीचा आर्शिवाद आपल्या पाठीशी राहो ही प्रभूचरणी प्रार्थना.

इंद्रायणीची काढी देहाची आळंदी
लागली समाधी ज्ञानेशाची
आळंदी करता करता गेले आळंदीत विलीन होऊन.

– लेखिका
सौ. संगीता दिवेंद्र तुरखडे
मो.नं. ९४०३६१९३३६

***

मन्त्र-व्याख्या

मन्त्र – ओ३म्। इहैक स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुब्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौपुत्रै नप्तृभिमोदमानौ स्वेगृहे।।

ऋ०१०/८५/४२

हे दम्पति ! पतिपत्नी ! तुम दोनों (इह+एव) यहां ही (स्तम्) रहो (मा) मत (वियौष्टम्) वियुक्त होवो (पुत्रै.) पुत्रों और (नप्तृभिः) नातियों और पोतों के साथ (क्रीडन्तौ) खेलते हुए (स्वे) अपने (गृहे) घर में (मोदमानौ) आनन्दित होते हुए (विश्वम्) पूर्ण (आयु) आयु (व्यश्नुतम्) भोगो

वैदिक धर्म में पतिव्रत और पत्नीव्रत धर्म पर बहुत बल दिया गया है। वेद में विवाह का प्रयोजन सन्तान को जन्म देना है न कि भोग विलास।

सन्तान उत्पत्ति के लिए संयम मुख्य है। उसके लिए पति पत्नी दोनों को कुछ नियम पालन करने पड़ते हैं। सन्तान अपनी अपेक्षा उत्कृष्ट हों, इसके लिए संयम अनिवार्य, उस संयम के लिए पतिव्रत तथा पत्नीव्रत दोनों आवश्यक है।

अतः वेद मन्त्र में आदेश दिया है – इहैव स्तं.... तुम दोनों यहाँ रहो। यदि एक समय में एक से अधिक पतिया पत्नी का विधान होता तो स्तम् द्विवचन न होकर स्त बहुवचन होता। चिरकाल तक यदि पति को प्रवास में रहना हो, तो पत्नी को साथ ले जाए, अर्थात् यथासंभव दोनों इकट्ठे रहें।

वेद का स्पष्ट आदेश है – मा वियौष्टम् तुम एक दूसरे से वियुक्त न हों।

एक दूसरे से पृथक् होने से त्रुटि हो सकती है। पति पत्नी में परस्पर प्रेम न हो तो सन्तान अच्छी नहीं होती जैसा कि मनु महाराज ने मनुस्मृति में लिखा है – सन्तुष्टोभार्यया भर्ता भर्त्रा आर्या त थैव च।

यस्मिन्नेवकुले नित्यं कल्याणंतत्रवैध्रुवम्।।

जिस कुल में पत्नी से पति और पति से पत्नी अच्छी प्रकार रहते है, उस कुल में सौभाग्य और ऐश्वर्य अवश्य निवास करता है।

इसीलिए वेद का आदेश है कि, चक्रवाकेव दम्पती पति पत्नी दोनों चकवा चकवी की भांति परस्पर प्रीति करने वाले हों। यह तभी हो सकता है एक स्त्रीका एक ही पति हों तथा एक पुरुष की एक ही पत्नी हों।

– विद्यासागर शास्त्री
सुराज कॉलनी, प्लॉट नं. ४०, अमरावती.

***

वेदप्रचार एवं श्रावणी पर्व समारोह सोल्लास संपन्न

ससार की संपूर्ण समस्याओं का एक ही समाधान है– वेद प्रचार एवं वेदाचार– आचार्य चन्द्रशेखर

आर्य स्त्री समाज मंदिर (बहावलपुर) राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के तत्वावधान में षट् दिवसीय वेदप्रचार समारोह उल्लासमय वातावरण में संपन्न हुआ। इस समारोह के मुख्य वक्त आर्यजगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधति करते हुए कहा कि श्रवण सुनने को कहते हैं और श्रावण सुनाने को। संसार की संपूर्ण समस्याओं का एक ही समाधान है– वेदाचार एवं वेद प्रचार। आचार्य श्री ने वेदमंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि हे मनुष्य! मनुर्भव मनुष्य बनने पर तो सारा संसार तेरा परिवार होगा। संसार का ताना–बाना बुनता हुआ भी तू प्रकाश का अनुसरण कर। ज्ञान का लाभ तभी है जब वह अपने आचरण का अंग बन जाये, क्योंकि जानना, जानने के लिए नहीं अपितु कुछ करने के लिए है। समापन दिवस पर आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा लिखित सफल जीवन के मूल मंत्र नामक पुस्तक का निःशुल्क वितरण किया गया।

समाज मंत्राणी श्रीमती जनक चुघ जी एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद किया। आर्य समाज राजेन्द्र नगर के मंत्री श्री नरेन्द्र वलेचा जी ने सभी विद्वानों का पी वस्त्र से स्वागत किया। यज्ञब्रह्मा आचार्य अनिल शास्त्री जी एवं श्रीमती अमृत आर्या जी ने सुन्दर भजनोंकी प्रस्तुति की।

कर्मयोग के व्यावहारिक व्याख्याता श्री कृष्ण थे – आचार्य चन्द्रशेखर

आर्य महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली– के तत्वावधान में स्वतंन्त्रता दिवस एवं श्री कृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह के मुख्य वक्ता अध्यात्म–पथ के संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने रवचाखच भरे भव्य सभागार में आर्य नर नारियों को संबोधित करते हुए कहा कि विषाद से प्रसाद की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर, कायरता से वीरता की ओर, पलायन से पुरूषार्थ की ओर, अर्जुन को माध्यम बना योगेश्वर श्री कृष्ण ने गीता का संदेश दिया। योगेश्वर श्री कृष्ण विभूतियों की विभूति हैं। वेद शास्त्र पारंगत, सर्वगुणागार, लोकनायक योगिराज श्री कृष्ण के व्यक्तित्व में संकल्प शीलता थी, धैर्यशीलता इस सीमा तक थी कि पर्वत के समान विशाल और गंभीर चुनौती कोभी वे निरस्त करने में सक्षम थे। आचार्य देवेश प्रकाश जी ने देशभक्ति पर अपने विचार रखें। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बम्बानी जी ने ध्वजारोहण किया। ४१ रोटरी क्लब के सदस्यों ने सभी माताओं को शाल ओढ़ाकर उनका अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन आश्रम प्रधाना श्रीमी आदर्श सहगल ने कया। शांति पाठ के उपरांत प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

– अश्विनी नांगिया
प्रबंध संपादक
अध्यात्म पथ
नई दिल्ली.

***

शिक्षक दिवस ५ सितम्बर पर विशेष
प्रथम भारतीय प्रिंसिपल महात्मा हंसराज

महात्मा हंसराज का जन्म १९ अप्रेल सन १८६४ ई० को पंजाब के होशियारपुर जिलान्तर्गत कस्बा बजवाड़ा में लाला चुन्नीलाल के गृह में हुआ था। आके बड़े भाई लाला मुल्कराज थे। आपकी प्राइमरी की शिक्षा कस्बा बजवाड़ा के ही स्कूल में हुई तत्पश्चात आगे की पढ़ाई के लिए दोनों भाइयों को होशियापुर के स्कूल में प्रविष्ठ करा दिया गया दोनों भाई चार पाँच किलोमीटर का मार्ग पैदल ही चलकर तपती रेत में नंगे पैर स्कूल तक जाते थे हंसराज पढ़ाई में निपुण थे और अपनी कक्षा में सदा ही प्रथम स्थान पर ही रहते थे। लाला मुल्कराज ने सन १८७७ में एंट्रेस की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तरीर्ण कर ली उन्हें आठ रूपया मासिक छात्रवृत्ति मिलने लगी और लागे की पढ़ाई के लिए लाहौर भेज दिया गया उन्होकंने हंसराज को भी लाहौर बुलवा लिया लाहौर में हंसराज को क्रिश्चियन स्कुल में प्रवेश दिलाया गया मुल्कराज को डाकखाने में सरकारी नौकरी मिल गई और उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी।

सन १८७७ में जब दोनों भाई लाहौर में थे तो संयोग से उसी वर्ष स्वामी दयानन्द भी पंजाब का प्रवास करते हुए १९ अप्रेल को लाहौर पहुँचे स्वामी जी के आगमन से लाहौर में धूम मच गई और जब उनके व्याख्यान होने लगे तो लोगों को एक नई दिशा का ज्ञान होने लगा उसी समय लाहौर में सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना हुई थी हंसराज तब तक किशोरावस्था में पहुँच चुके थे और उनकी बुद्धिमता के कारण उनको अन्य साथियों की अपेक्षा स्वामी जी के प्रवचनों का सार भली भाँति समझ में आता था तभी से हंसराज आर्य समाज के विचारों से ओत प्रोत हो गए।

उस समय भारत में कलकत्ता विश्वविद्यालय ही सर्वमान्य विश्वविद्यालय था, सब प्रान्त उसी विश्वविद्यालय की परीक्षायें दिलाया करते थे हंसराज ने लाहौर के माध्यम से १८८० में कलकत्ता विश्वविद्यालय की एंट्रेस की परीक्षा उत्तीर्ण की। यदि हंसराज चाहते तो उनको उस समय भी कोई अच्छी नौकरी मिल सकती थी किन्तु उनकी इच्छा पढ़ने की थी अपने पिता तुल्य बडें भाई लाला मुल्कराज से जब उन्होंने अपनी इच्छा की बात कही तो उन्होंने उन्हें कालेज में प्रविष्ट होने वकी स्वीकृति प्रदान कर दी उसी वर्ष लाला लाजपतराय, पण्डित गुरूदत्त विद्यार्थी, राजा नरेन्द्रनाथ, रूचिराम साहनी आदि कालान्तर में पंजाब के उल्लेखनीय व्यक्तियों ने भी उसी कालेज में प्रवेश प्राप्त किया इनमें लाला लाजपत राय, पण्डित गुरूदत्त विद्यार्थ राजा नरेन्द्रनाथ से उनकी घनिष्ठता हो गई थी।

३० अक्टूबर सन १८८३ ई० को महर्षि दयानन्द ने निर्वाण प्राप्त किया सात दिन बाद ८ नवम्बर को लाहौर के आर्य पुरूषों की एक सभा हुई पं० गुरूदत्त विद्यार्थी और उनके साथियों ने भावूपर्ण शब्दों में प्रस्ताव किया कि ऋषि की यादगार में एंग्लो वैदिक स्कूल तथा कालेज की स्थापना की जाए सारी उपस्थित जनता ने प्रस्ताव को स्वीकार किया।

लाला हंसराज ने तब तक बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करली थी उनके परिवार वालों को लगा कि अब उनकी आर्थिक दशा सुधर जाएगी क्योंकि उन्हें आशा थी कि बी०ए० कर लेने पर लाला हंसराज को अच्छी नौकरी मिल जाएगी किन्तु उनकी यह आशा फलवती न हो पाई हंसराज स्वभाव से ही स्वतंत्रता प्रेमी व्यक्ति थे। उन्हें किसी का निनयंत्रण कभी स्वीकार्य न था। उन्हें भाँति भाँति के सरकारी व गैर सरकारी पदों के प्रस्ताव भी प्राप्त हुंए उनके मन में किसी देशी रियासत का प्रधानमंत्री बनने की लालसा एक बार अवश्य ही जाग्रत हुई परन्तु जब उन्हें पता लगा कि महर्षि दयानन्द की पावन स्मृति में दयानन्द स्कूल और दयानन्द कालेज स्थापित करने का निश्चय हुआ है और धनाभाव के कारण पूरा नहीं हो पा रहा है तब प्रधानमंत्री की लालसा पर एक महान त्याग का भाव छाने लगा। रह रह कर उनके मन में यही प्रश्न उठता था कि जिस महर्षि ने लोक कल्याण के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया उसके ध्येय को सफल करने के लिए क्या वे कुछ भी नहीं कर सकते।

लाला हंसराज उन दिनों पूर्णतया अपने भाई के वेतन पर निर्भर थे। उनकी कृपा से ही पढ़ पाए थे। तदापि जब दयानन्द कालेज की स्थापना का विषय उठा था और उसके लिए धन एकत्रित किया जा रहा था तो उन्होंने भी किसी प्रकार जोड़कर दस रूप्ये की राशि उसमें दी थी हंसराज के मन में कुछ और ही समा गया था अपने बड़े भाई की शरण में जाकर उन्होंने किसी प्रकार की भूमिका की चिन्ता न करते हुए एक प्रकार से यही कहा मुझे यह जानकर बड़ा दुःख हो रहा है कि लाहौरवासियों ने दयानन्द कालेज की स्थापना का निर्णय कर लिया है किन्तु उसके लिए जितना धन चाहिए वह एकत्रित नहीं हो पा रहा है। इस कारण वह कार्य एक प्रकार से शिथिल पड़ गया है मेरी इच्छा हो रही है कि मैं इस कार्य के लिए अपना जीवन समर्प्ति कर दूँ, अपनी सेवाओं के विनिमय में कालेज से मैं एक पैसा भी न लूँ। मैं अपना जीवन इसको दान कर देना चाहता हूँ, किन्तु आपकी अमूल्य सहायता के अभाव में यह कार्य सम्पन्न होना कदापि संभव नहीं है।

लाला मुल्कराज ने बड़ेयान से छोटे भाई की बात को सुना उस पर विचार किया और गहन चिन्तन के बाद उनके मुख पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दी। लाला मुल्कराज को उन दिनों रू0 ८0/- मासिक वेतन मिलता था, अब तक भी वे छोटे भाई की आर्थिक सहायता किया ही करते थे उनको निश्चय करने में कुछ अधिक कठिनाई नहीं हुई। उन्होंने अपना आधा वेतन अपने छोटे भाई के लिए निर्धारित कर दिया और लाला हंसराज ने लाहौर आर्य समाज को पत्र लिखकर सूचित किया दयानन्द स्कूल खुलने पर मैं उसका अवैतनिक मुख्याध्यापक बनने के लिए उद्यत हूँ।

0१ जून १८८६ ई0 को आर्य समाज लाहौर के भवन में हाईस्कूल आरम्भ कर दिया गया और लाला हंसराज को इसका अवैतनिक मुख्याध्यापक नियुक्त कर दिया गया केवल पाँच दिन में ही इस स्कूल में तीन सौ विद्यार्थियों ने प्रवेश ले लिया ५ जून १८८६ के लाहौर से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी दैनिक पत्र ट्रिव्यून ने लिखा - हमें मुख्याध्यापक महोदया पर पूर्ण विश्वास है जिन्होंने अपने आराम सुख और नाम की तनिक भी अपेक्षा न करते हुए अपना जीवन इस कार्य के लिए अर्पण कर दिया और इस प्रकार हंसराज प्रथम भारतीय प्रिंसिपल बने। क्योंकि अभी तक क्रिश्चियन स्कूल कालेज हों अथवा भारतीयों द्वारा स्थापित सभी में प्रिंसिपल अँग्रेज ही होते थे।

इस स्कूल की एक विशेषता यह भी थी कि इसने शिक्षा विभाग से सम्बद्धता के लिए कभी आवेदन नहीं किया और न ही कभी सहायता अथवा अनुदान के लिए प्रार्थना की। यद्यपि इसको मान्यता प्राप्त हुई वह एक अन्य विषय है।

लाला हंसराज द्वारा स्कूल को नियमित रूप से चलाए जाने के विषय में उठी शंकाओं को उन्होंने अपनी कार्यकुशलता से शीघ्र ही निर्मूल साबित कर दिया। उनके अनुशासन और त्याग की छाप उनके विद्यार्थियों पर पड़े बिना न रह सकी थी। कहा जाता है कि जो विद्यार्थी प्रथम वर्ष में इस स्कूल में प्रविष्ट हुए थे उनमें एक शाहबुद्दीन नाम का मुस्लिम छात्र भी था। कालान्तर में वह शाहबुद्दीन कहलाया और बीस वर्ष तक निरन्तर विधान सभी का अध्यक्ष बना रहा था। लाला हंसराज के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा थी। लाला जी की मृत्यु पर वह उनकी शोक सभा में भी सम्मिलित हुआ था। उसने अपनी श्रद्धांजलि में कहा था जब मेरे पिता की मृत्यु हुई तो मैंने अनुभव किया मैं पिता विहीन हो गया हूँ। जब मेरी माता की मृत्यु हुई तो मैंने समझा कि मैं माता विहीन हो गया हूँ, आज लाला हंसराज की मृत्यु पर मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मैं सर्वथा अनाथ हो गया हूँ।

दयानन्द कालेज कमेटी में एक प्रकार से दो दल हो गए थे। उसी के कारण विाद बढ़ता जाता था। कमेटी में जिस दल का प्रभुत्व था उसके सुसंस्कृत दल कहा जाने लगा था और आर्य समाज में जिस दल का प्रभुत्व था वह महात्मा पार्टी कहलाने लगा था। महात्मा अर्थात लाला हंसराज। अब उनको लाल हंसराज के स्थान पर सम्मान से महात्मा जी कहा जाने लगा था, उनकी त्याग तपस्या का यही प्रतिफल था जोसमाज ने उनको दिया था।

महात्मा हंसराज डी0ए0पी0 कालेज के प्रधानाचार्य होते हुए भी किराए के एक छोटे महान में ही रहते थे

जिसका मासिक किराया चार रूप्या मासिक था। उनका पहनावा भी बड़ा साधारण सा होता था खादी का कुर्ता और खादी का पायजामा। अधिक कपड़े न तो वे पहनते थे और न पास में रखते थे। सर्दियों में कश्मीर पट्टू का गर्म कोट पहन लेते थे। गमियों में गबरून का कोट पहनते थे। उनके पाँव में होशियापुर का बना देशी जूता होता था, वे जुर्राबें (मोजे) नहीं पहनते थे विदेशी वस्तुओं का उन्होने कभी प्रयोग नहीं किया।

उन्होंने २६ वर्ष तक अवैतनिक प्राचार्य के रूप में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज लाहौर की सेवा की। प्रतिमाह हजारों रूपये वेतन के रूप में बाँटकर जाते और स्वयं खाली हाथ घर जाते थे।

जहाँ तक महात्मा हंसराज जी के महान कार्यों का सम्बन्ध है उन्होंने शिक्षा, वेद प्रचार, हिन्दु जाति की कुरीतियों का सुधार, अकाल बाढ़ और महामारियों जैसी विपत्तियों में हिन्दु जाति की सेवा की और शुद्धि कार्य क्षेत्रों में समर्पित भावना से कार्य करके कीर्तिमान स्थापित किए।

– वेदारी लाल आर्य

५४, हाता प्यारे लाल नगरा, झाँसी-२८४००३ (०९४७३९३७१३८)

***

हृदय मन्दिर के भाव बोलते हैं –

मानवता और इसकी सीमायें

सीधे-सादे शब्दों में कहा जाता रहा है कि दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार कीजिये जैसा आप उनसे अपने प्रति चाहते हैं। यह ऐसा वचन है जिसके पालन से प्रत्येक व्यक्ति आपसी व्यवहार में उच्चतम मानवीयता का पालन कर रहा होगा। मैं नहीं समझता कि ऐसे मनुष्य भी होंगे जो दूसरों से दुर्भावनायुक्त घृणित व्यवहार चाहते हों।

इस आदर्श के विपरीत कोई व्यक्ति, समाज, देश यदि अनुचित व्यवहार सामनेवाले के प्रति करे और समझाने पर भी नहीं माने तो क्या किया जायेगा। यदि सर्प से यह अपेक्षा करें कि वह अपना विषैला व्यवहार छोड़ दे तो यह कैसे सम्भव है। वैसे सर्प भी प्रत्येक को नुकसान नहीं पहुँचाता। इसी प्रकार से बहुत से जीव हैं जिनका जीवन ही दूसरों के प्राणहरण अथवा उन्हें कष्ट पहुँचाकर चलता है। यदि यही व्यवहार मानव का हो जाये तो क्या करना चाहिये।

वैसे समाज में एक उक्ति यह भी प्रचलित है कि दुष्ट व्यक्ति दण्ड द्वारा ही मानता है। यह दण्ड ही ऐसे व्यक्तियों को विवश करता है कि वह आपको क्षति नहीं पहुँचायेंगे। यह दण्ड किसी का प्राणहरण ही हो यह आवश्यक नहीं है। इसके अनेक प्रकार हैं। यह सज्जन व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार ऐसी स्थिति का सामना करता है कि उसका नुकसान नहीं हो और दुष्ट की दुष्टता से भी छुटकारा हो जाये।

हमारा मानना है कि तथाकथित अहिंसा का पालन व्यक्तिगत जीवन को तो सम्भवतः गरिमा व उच्चता प्रदान करता है। इसके विपरीत यह राष्ट्रीय जीवन में अव्यावहारिक है। आपके प्रति सामनेवाला तभी तक अहिंसक होता है जब तक उसे यह सुनिश्चित होता है कि आप उससे अधिक शक्तिशाली हैं और हानि उसी की होगी। इसके विपरीत वह छल-छद्म द्वारा आपको दुर्बल करके हानि पहुँचाना चाहे तो साम-दाम-दण्ड-भेद द्वारा कैसे भी करके उसे शक्तिहीन करके रखना होगा।

आप तो उच्च मानवीयता का पालन करेंगे ही। इसलिये आपसे किसी को किसी प्रकार का नुकसान होना नहीं है परन्तु आसुरी वृत्ति के जन, समूह व देश के समकक्ष अपने को सबल तथा उसे दुर्बल बनाकर ही मानव और मानवता की सुरक्षा सम्भव है।

– प्रभाकरदेव आर्य

।। ओ३म्।।

रास अल खेमा U.A.E.
(RAS AL KHAIMAH)

समादरणीय श्रीयुत

सादर नमस्ते।

* ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

* ध्यान अध्यापन, शंका समाधान आदि के रूप में वैदिक धर्म प्रचारार्थ २१ जनवरी, २०१७ को दुबई पहुंचा। यह मेरी २६ वीं प्रचार यात्रा है। देश-विदेश, जहां कहीं पर भी जाता हूँ, प्रायः सर्वत्र आर्य सज्जनों के द्वारा, (विशेष कर युवक) एक प्रश्न प्रमुखता से उपस्थित किया जाता है कि सत्य, सनातन, ईश्वरीय-धर्म, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, आचार-विचार एवं आदर्श परम्पराओं का समाज राष्ट्र विश्व में प्रचार-प्रसार क्यों नहीं हो रहा है ? आज देश में हजारों की संख्या में आर्य समाजें हैं, विद्यालय, गुरुकुल, आश्रम तथा अन्य संस्नि हैं, जिनमें यज्ञ-संध्या, सत्यंग, स्वाध्याय, भजन, प्रवचन, कथा, शिविर, समारोह, उत्सव, संगोष्ठी आदि सम्पन्न होते हैं, इन सबसे व्यक्तिगत, पारिवारिक लाभ तो अवश्य होते हैं, किन्तु समाज, राष्ट्र के अन्य (वैदिक धर्म से अपरिचित) व्यक्तियों को इनसे लाभ नहीं होता है या अतिन्यून होता है। हम आर्यों का सब कुछ श्रेष्ठ, महान, आदर्श होतेहुवे भी हम बढ़ नहीं पा रहे हैं। लोग वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट नहीं हो पा रहे हैं।

* वैदिक धर्म सार्वभौमिक, सर्वकालीन, सर्वजनीन होते हुवे भी हम इसे फैला क्यों नहीं पा रहे हैं ? शास्त्रकार ऋषियों ने लिखा है कि सत्यमेव जयते नानृतम् किन्तु वर्तमान में हो सप्ष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि सत्य, असत्य से पराजित हो रहा है; श्रेष्ठ, निकृष्ट से दब रहा है; उत्तम, घटिया से पिछड़ रहा है, आदर्श; अनादर्श से अभिभूत हो रहा है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के सिद्धान्त अब या तो पुस्तकों में ही शोभा दे रहे हैं या फिर मंच पर विद्वानों का प्रवचन का विषय रह गये हैं। सामान्य मनुष्यों की तो यह मानसिकता बन गयी है कि, बिना झूठ, छल, कपट, छभ, अन्याय के तो जीवित रहना भी संभव नहीं है। समाज राष्ट्र में यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि छली, कपटी, अन्यायी, शोषक, धूर्त-चालाक, छमी व्यक्ति बड़े ठाठ से, सुख सुविधा वाले साधनों के साथ गर्व के साथ जी रहे हैं और सत्यवादी, आदर्श, धर्मपरायण सज्जन लोगों को अनेक प्रकार के अभावों, अन्यायों, अत्याचारों, बाधाओं, कष्टों के कारण दुःखमय जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। इस स्थिति के कारण भी जन सामान्य में सत्य, धर्म, आदर्शों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो गई है।

* इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हमारे पास ईश्वर, ज्ञान, सिद्धान्त, कर्म, उपासना, शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार आदि समस्त विषय का विज्ञान श्रेष्ठ होते हुवे भी इसके प्रचार-प्रसार में जिन साधनों, सुविधओं, बुद्धि, साहस, बल, पराक्रम त्याग, तप, लगन, सहनशक्ति, धैर्य, निष्कामता की नितान्त अपेक्षज्ञळै;डन्क्ज्ञटीाव है, न्यूनता है। मात्र धनैश्वर्य-सुख सुविधाओं के विपुल तथा उत्कृष्ट हो जाने से कोई धनिक नहीं बन जाता, जब तक समाज राष्ट्र के विपन्न जन समुदाय के लिए, उनका त्यागपूर्वक सदुपयोग न करे। बलिष्ठ, वीर्यवान् की संज्ञा, वही प्राप्त करने का अधिकारी है, जो मात्र शक्ति, सौष्ठव, बृहदाकार का आधिक्य ही न रखता हो, बल्कि अपने बल, साहस, पराक्रम, उत्साह, प्रगल्भता का प्रयोग, निर्बल, प्रताड़ित, शोषित, अन्याय से ग्रस्त दुःखित व्यक्तियों की रक्षा के लिए करे। सच्चा विद्वान वही है जो समाज राष्ट्र में प्रचलित अज्ञान, असत्य, पाखण्ड, अंधविश्वास को नष्ट करने के लिए साहस, निर्भीकता के साथ परम पुरूषार्थ करे, इस कार्य के करते हुवे मृत्यु भी आजावे तो घबराये नहीं।

* हमें यह बात अच्छी प्रकार से मन में रखनी चाहिए कि स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना केवल वहां जाकर व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन को श्रेष्ठ, उन्नत, बनाने के लिए नहीं की है बल्कि इसके माध्यम से न

केवल राष्ट्र बल्कि समस्त विश्व को भी श्रेष्ठ बनाने के लिए की है। साप्ताकि सत्संग के कार्य तो हम घर पर भी करते हैं, करने चाहिएं। समाजों में तो आर्य सभाससदों को समाज, राष्ट्र में से मांसाहार, मद्यपान, द्यूत, व्यभिचार, नास्तिकता, अंध-विश्वास, पाखण्ड, रिश्वत, झूठ, छल, कपट, अन्याय, अत्याचार जैसी बुराइयों को कैसे निर्मूल किया जाये और इसके लिए कौन कितना किस प्रकार का तन-मन-धन-समय-बुद्धि का पूर्ण निष्ठा, श्रद्धा, विश्वास, निष्कामता पूर्वक सहयोग करेगा यह सब मिल बैठकर, सुनिश्चित करना चाहिए। स्मरण रहे कि सत्य की, धर्म की, आदर्श की जीत स्वतः नहीं होती, बल्कि उसे पूर्ण संगठित होकर, योजनाबद्ध रूप से, पूर्ण-पुरूषार्थ-घोर तपस्या-आत्मविश्वास तथा ईश्वर की सहायता से जिताया जाता है।

* हे देवाधिदेव महादेव ! हम वेदानुयायी, ऋषि भक्त, याज्ञिक, ध्यानी स्वाध्यायशील, आचार्य, प्रचारक, अधिकारी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी संन्यासी सभी आर्यों के समक्ष, ये अधर्मी, विधर्मी, कुधर्मी, दैत्य पिशाच, असुर, नास्तिक अपने आतंक से समाज-राष्ट्र-विश्व को नरकमय बनाये जा रहे हैं और हम हाथ पर हाथ रखे, मूक बन कर, मात्र मन मसोस कर, इनको निहार रहे हैं। कुछ भी नहं कर पा रहे हैं। हे अन्तर्यामिन दयानिधान ! वेद ज्ञान को समग्र विश्व में प्रसारित प्रचारित करने हेतु हमें विपुल शक्ति, अदम्य-साहस, अटूट-विश्वास, अचल-पराक्रम, उत्कृष्ट-उत्साह प्रदान करो, जिससे हम मात्र घर या समाज मंदिर में, यज्ञ-संध्या-स्वाध्याय-सत्संग-भजन तक ही सन्तुष्ट न रहें, बल्कि अत्यन्त साहसिक, विशिष्ट क्रान्तिकारी कार्यों का सुसम्पादन करें, यह उद्योग आपके सहाय के बिना असंभव है। हमें पूर्ण विश्वास व आशा है कि आप शीघ्र, अवश्य ही हमारे में वीर्य-ओज-बल प्रदान करके, इन कार्यों के सम्पादन करने में हमें समर्थ बनायेंगे।

ज्ञानेश्वरार्यः

***

महर्षि-महिमा

दबाल्ये नो गृहिणो भवन्तु मनुजाः, ऐसी प्रथा हो गई।
उद्वाहाः सुपरीक्षिताः प्रचलिताः, खन्ने खुराणे हट गये।।
वैधव्यं विधवाभिलाष परकं, चाहें गृहस्थी करें।
सर्वेषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।

भावार्थ - बालकपन में नर-नारी गृहस्थ न बन सकें ऐसी मर्यादा स्थिर हो गई। ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों के विवाह शिक्षा-बल-चरित्र-कुल आदि की पूरी परीक्षा के पश्चात् ही होने लग गये, खन्ने-खुराणे आदि जाति-बन्धन सब हट गये। विधवाओं का विधवापन में रहना उनकी इच्छाओं पर निर्भर होगा। यदि वे चाहें तो उनके गृहस्थिनी बनने में कोई बाधा नहीं रही। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

- पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति

आर्य सेवक, नागपुर

प्रति, _____

_____

प्रकाशक : अशोक यादव, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा
मध्यप्रदेश एवं विदर्भ, नागपुर फोन : ०७१२-२५९५५५६ द्वारा उक्त सभा के लिये प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : फोन :